

पद २६१

(राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल)

उद्धव तुम जाके वो हरिसे कहिये ॥ध्रु.॥ अन्न त्यजे ना जल की हो
आस । रोवन लागे गौवे ॥१॥ छांड़ दिये हम ब्रिज ग्वालनको ।
कुबरीसो प्रीत लगाये ॥२॥ मानिक के प्रभु तुमरे दरसको । व्याकुल
ब्रिज सब भये ॥३॥